ओ३म्

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन

(पी–एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध)

संक्षेपिका



निर्देशक

डॉ० सत्यव्रत 'राजेश'

एम०ए०, पी–एच०डी०

शोधकर्त्री

कामजित्

वेद–विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

१ ९ ८ ७

ओ३म्

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन

(पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध)

संक्षेपिका



निर्देशक
डॉ० सत्यव्रत 'राजेश'
एम०ए०, पी-एच०डी०

शोधकर्त्री
कामजित्

वेद-विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

१९८७

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन

शोध की दिशा तथा शोधप्रबन्ध का सारांश

इन्द्र देवता कलेवर तथा महत्त्व दोनों ही दृष्टियों से वेद का एक प्रमुख देवता है । चारों वेदों में इन्द्र के मूल मन्त्र तथा सहचारी देवों के साथ स्तुति वाले मन्त्र कुल मिलाकर लगभग पांच सहस्र हैं,जो वेदों की सम्पूर्ण मन्त्रसंख्या का लगभग चतुर्थांश होता है । वैदिक इन्द्र पर प्राचीनकाल से ही विचार होता रहा है और आधुनिक युग के भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस पर अपनी लेखनी उठायी है । इस पर कतिपय शोध निबन्ध भी लिखे गये हैं । तथापि अब तक जो कुछ कार्य हुआ था वह कार्य या तो इन्द्र के वर्णनों एवं इन्द्र की गाथाओं का संकलन था, अथवा इन्द्र के कुछ वैदिक वर्णनों को आकाशीय विद्युत् या सूर्य के पक्ष में घटाया गया था, अथवा इन्द्र को किसी प्राकृतिक शक्ति का अभिमानी देवता स्वीकार करके वेदमन्त्रों का भाष्य कर दिया गया था । इन्द्र देवता पर व्यापक दृष्टिकोण से लेखनकार्य प्राय: नहीं हुआ था ।

वेदों की व्याख्या के सम्बन्ध में 19वीं ईस्वी शती के वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती की एक विशेष देन है। उनसे पूर्व अधिकांश वेदभाष्यकारों के भाष्य प्रायः कर्मकाण्डपरक थे, जिससे यह भ्रान्ति होती थी कि वेदों में कर्मकाण्ड के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। दयानन्द के अर्थ प्रायः सभी वेदार्थ-प्रक्रियाओं को दृष्टि में रखते हुए किये गये हैं। वे वेदों में गूढ़ अध्यात्मविद्या के साथ-साथ सृष्टिविद्या, पृथिव्यादि-लोकभ्रमणविद्या, गणितविद्या, नौविमानादिविद्या, विद्युद्विद्या, वैद्यकविद्या, राजनीतिविद्या, यज्ञविद्या, कृषिविद्या, शिल्पविद्या, अध्ययनाध्यापनविद्या आदि विविध विद्याओं को स्वीकार करते हैं। वेदों में जो इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, वायु, सूर्य, सविता, पूषा, विष्णु आदि विभिन्न देव वर्णित हैं, उन्हें भी दयानन्द ने एक नवीन रूप में देखा है। उन्होंने अपने वेदभाष्य में इन्द्रदेवताक मन्त्रों की जो व्याख्याएं की हैं, उनसे स्पष्ट होता है कि उनके अनुसार वेदों में इन्द्र देवता परमेश्वर, जीवात्मा, प्राण, राजा, सेनापति, अमात्य, न्यायाधीश, सभापति, योद्धा, अध्यापक, उपदेशक, विद्वान्, सूर्य, विद्युत्, वायु, गृहपति, वैद्य, कृषक आदि अर्थों का वाचक है, तथा वेदों में इन सभी के कर्तव्य-कर्मों या गुण-धर्मों का उपदेश किया गया है। दयानन्द ने वैदिक देवों को इस प्रकार व्यापक रूप में ग्रहण करने के सूत्र स्वयं वेद से तथा ब्राह्मण ग्रन्थ निरुक्त आदि प्राचीन साहित्य से प्राप्त किये थे।

दयानन्द के वेदभाष्य पर कई लोगों की ओर से यह आपत्ति उठाई जाती है कि उसमें इन्द्र, अग्नि, मित्र, वरुण आदि देवों के मनमाने अर्थ कर लिये गये हैं। परन्तु अनुसन्धान से यह ज्ञात होता है कि वैदिक देवों के दयानन्दकृत अर्थ प्रमाण-परिपुष्ट हैं। कतिपय अर्थों के लिए उन्होंने स्वयं वेद ब्राह्मणग्रन्थ आदि के प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। उदाहरणार्थ, इन्द्र का अर्थ वायु करते हुए उन्होंने वेद तथा ब्राह्मणग्रन्थ के निम्न प्रमाण दिये हैं।

0 विश्वेभिः सोम्यं मध्वम्न इन्द्रेण वायुना । ऋ 1/14/10
(द्रष्टव्य, ऋग्वेदभाष्य 1/3/6, 15/1)

0 यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः । श ब्रा 4/1/3/19
(द्रष्टव्य, ऋग्वेदभाष्य 1/21/1)

दयानन्द की इसी शैली से निर्देश पाकर हमने इन्द्र के दयानन्दकृत प्रायः सभी अर्थों के लिए परिश्रमपूर्वक वेद, ब्राह्मणग्रन्थ आदि से प्रमाण खोज कर लिखे हैं । यह इस शोधप्रबन्ध की एक विशेष देन समझी जा सकती है ।

वेदों की प्रतिपादन-शैली ऐसी नहीं है कि किसी एक विषय के सभी मन्त्र एक स्थान पर रख दिये गये हों । इसीलिए दयानन्द के वेदभाष्य में भी ऐसा नहीं हो सका है कि परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, राजप्रजाधर्म, शिक्षा, शिल्प, वर्णव्यवस्था आदि सब विषय पृथक्-पृथक् व्यवस्थित रूप में किसी एक स्थान पर प्रतिपादित हुए हों । किसी विषय का निरूपण करने के लिए इन्द्र देवता के सभी मन्त्रों एवं उनके भाष्य को देखना तथा विषयानुसार विभाजन करके पृथक्-पृथक् शीर्षकों के अन्तर्गत लिखना आवश्यक होता है, जो पर्याप्त जटिल कार्य है । तथापि प्रयासपूर्वक यह कार्य करके तदनुसार शोध प्रबन्ध में विभिन्न अध्यायों को निर्धारित कर प्रत्येक विषय में पुष्कल सामग्री देने का यत्न किया गया है ।

स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक मन्त्र के भाष्य में यह क्रम रखा है कि सर्वप्रथम वे मन्त्रार्थभूमिका अर्थात् एक-डेढ पंक्ति में मन्त्र का प्रतिपाद्य विषय संस्कृत-भाषा में आर्यभाषानुवाद सहित लिखते हैं । तत्पश्चात् सस्वर मन्त्रपाठ तथा उसका सस्वर पदपाठ देते हैं । तदनन्तर मन्त्र में जिस क्रम से पद आते हैं, उसी

क्रम से उनका संस्कृत-पदार्थ लिखते हैं । फिर अन्वय पृथक् से दर्शाते हैं । उसके बाद संस्कृत में भावार्थ लिखते हैं । इसके बाद आर्यभाषा में अन्वयक्रम से ढाला हुआ पदार्थ तथा संस्कृत-भावार्थ का आर्यभाषानुवाद देते हैं ।

तथापि प्रस्तुत दयानन्द-भाष्य अनेक स्थलों पर अत्यन्त अस्पष्ट एवं दुर्बोध है । भाष्य की आर्यभाषा पण्डितों की बनाई हुई है, वह भी अधिकांश महर्षि के शरीरान्त के पश्चात् बनी है, जिसे महर्षि संशोधित नहीं कर सके । वह कई स्थानों पर संस्कृत भाष्य से मेल नहीं खाती है और कई स्थलों पर इतनी दुर्बोध है कि उसका कुछ अभिप्राय हृदयंगम नहीं होता । संस्कृत-पदार्थ भी अन्वयानुसारी न होने से उसका तात्पर्यार्थ समझ पाना कठिन होता है । दयानन्द भाष्य के शोधकर्ता के सम्मुख इस प्रकार की अनेक कठिनाइयां उपस्थित होती हैं । तथापि बड़े धैर्य और परिश्रम के साथ हमने इन्द्रदेवताक मन्त्रों के दयानन्द-भाष्य के मर्म में प्रवेश करने का प्रयास किया है । प्रत्येक अध्याय में प्रतिपादित विषय संक्षेपतः निम्न प्रकार है ।

<u>प्रथम अध्याय</u> — यह अध्याय प्रवेशात्मक है । वैदिक देवताओं के स्वरूप के सम्बन्ध में प्रचलित अभिमानिदेवतावाद, भौतिकवाद, अध्यात्मवाद आदि को दर्शाकर वेदार्थविषयक अधिदैवत, अध्यात्म, अधियज्ञ, ऐतिहासिक आदि प्रक्रियाओं का निरूपण किया है । तदनन्तर दयानन्द से पूर्ववर्ती भाष्यकार स्कन्दस्वामी, उद्गीथ, वेंकटमाधव, आनन्दतीर्थ, आत्मानन्द, उवट, भट्टभास्कर, माधव, सायणाचार्य, भरतस्वामी, महीधर आदि किस दृष्टिकोण से अपने-अपने वेदभाष्य करते रहे हैं, इसका उल्लेख कर वेदार्थ के सम्बन्ध में विदेशी विद्वानों के प्रयत्न का दिग्दर्शन कराया गया है । फिर स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषताओं के प्रसंग में वैदिक देव-देवियों के स्वरूप-निर्धारण, मन्त्रों की अनेकार्थक व्याख्या, वेदों में लौकिक इतिहास का निषेध, पूर्वकृत विनियोगों से स्वतन्त्र व्याख्या आदि का सोदाहरण विवेचन किया गया है ।

<u>द्वितीय अध्याय</u> — ब्राह्मणग्रन्थकारों ने तथा निरुक्तकार यास्काचार्य ने वैदिक इन्द्रदेवता के सम्बन्ध में जो उद्भावनाएं या स्थापनाएं की हैं, उनका वर्णन किया गया है । ब्राह्मण ग्रन्थों के सन्दर्भ उद्धृत करते हुए यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार ब्राह्मणकारों के मत में वैदिक इन्द्र यज्ञ में आहवनीय अग्नि, यजमान या उद्गाता है, अन्तरिक्ष में वायु है, द्युलोक में आदित्य है, शरीर में प्राण, मन और वाणी है, समाज में ब्राह्मण है, राष्ट्र में राजा है । निरुक्त में प्रतिपादित इन्द्र के स्वरूप पर विचार करते हुए इन्द्र के निर्वचनों का स्पष्टीकरण इन्द्र के कर्म, इन्द्र-वृत्र-युद्ध, इन्द्र द्वारा तीस सरोवरों का पान, इन्द्र-अगस्त्य-संवाद, इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी आदि पर प्रकाश डाला गया है । इस अध्याय में यह भी दर्शाया गया है कि किस प्रकार ब्राह्मणग्रन्थ तथा निरुक्त के संकेत दयानन्द की भाष्यशैली के लिए बहुमूल्य सिद्ध हुए हैं ।

<u>तृतीय अध्याय</u> — इन्द्र की परमेश्वरवाचकता पर प्रकाश डाला गया है । इन्द्र का परमेश्वर अर्थ होने में प्रमाण देकर, इन्द्र शब्द के निर्वचन की परमेश्वर पक्ष में संगति दर्शाकर, दयानन्द भाष्य में परमेश्वर-पक्ष में व्याख्यात इन्द्र के विशेषणों तथा उनसे सूचित होने वाले परमेश्वर के गुण-कर्म-स्वभावों का वर्णन किया गया है । तदनन्तर स्वामी दयानन्द ने इन्द्र देवता के मन्त्रों का परमेश्वर पक्ष में अर्थ करते हुए जो परमेश्वर का स्वरूप, महत्त्व आदि अपने वेदभाष्य में प्रकाशित किया है, उसका सप्रमाण विवेचन है ।

<u>चतुर्थ अध्याय</u> — इन्द्रदेवताक मन्त्रों के भाष्य में स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित विस्तृत राजधर्म का निरूपण इस अध्याय में किया गया है । इन्द्र का राजा अर्थ करने में प्रमाण, इन्द्र के निर्वचनों की राजा पक्ष में चरितार्थता एवं इन्द्र के विशेषणों से सूचित राजा के गुणों का प्रारम्भ में वर्णन है । तदनन्तर

प्रजा द्वारा कैसे मनुष्य को राजा चुना जाना चाहिए, यह दर्शाते हुए राजा के कतिपय विशिष्ट गुणों का वर्णन किया गया है । इस अध्याय में अमात्यों की योग्यता और अधिकार, राज्यकर्मचारियों की योग्यता, न्याय-व्यवस्था, राजदण्ड, कर-व्यवस्था, व्यापार, शिल्पविद्या के विकास, विमानादि के निर्माण और प्रयोग, सेनापति की योग्यता, सेना-संगठन, युद्ध-नीति, शत्रु-विजय, चक्रवर्ती राज्य आदि राजनीति के महत्त्वपूर्ण विषयों का भी दयानन्द कृत वेदभाष्य के अनुसार प्रतिपादन किया गया है ।

पञ्चम अध्याय — महर्षि दयानन्द ने अनेक वेदमन्त्रों में इन्द्र के अर्थ विद्वान्, अध्यापक, उपदेशक आदि लेकर बड़े विस्तार से शिक्षा विषयक सभी आवश्यक तत्त्वों को प्रदर्शित किया है, जबकि इस विषय में पूर्ववर्ती वेदभाष्यों से कुछ भी प्रकाश नहीं पड़ता । कोई भी राष्ट्र ब्रह्म और क्षत्र के समन्वय से ही उन्नति कर सकता है, यह दयानन्दभाष्य से स्पष्ट हो जाता है । राजा द्वारा विद्या एवं धर्म के प्रचारार्थ विद्वानों की नियुक्ति, विद्वानों का यथोचित सत्कार, अध्यापक और उपदेशक पद पर नियुक्त होने की आवश्यक योग्यता, अध्यापक एवं उपदेशकों के कर्तव्य, शिक्षक और शिष्य का पारस्परिक व्यवहार आदि महत्त्वपूर्ण विषय इस अध्याय में वर्णित किये गये हैं, जो आज की शिक्षा समस्याओं पर भी उत्तम समाधान प्रस्तुत करते हैं ।

षष्ठ अध्याय — यह अध्याय दयानन्द के वेदभाष्य में इन्द्र देवता से सूचित अन्य विविध विषयों से सम्बन्ध रखता है । सर्वप्रथम इन्द्र का सूर्य अर्थ दर्शाते हुए सूर्य द्वारा लोकों के धारण, वृष्टिकर्म, काल-संविभाग, सूर्य की स्थिरता, सूर्य के शिल्पविद्या में प्रयोग आदि वेदोक्त विषयों का प्रतिपादन है। तदनन्तर स्वामी दयानन्द ने इन्द्र का अर्थ विद्युत् लेकर उसके द्वारा भूयानों, जलयानों, विमानों, एवं अन्य विविध कलायन्त्रों को चलाने तथा विद्युत् से चलने

वाले शस्त्रास्त्रों को बनाने का मन्त्रार्थों में जो वर्णन किया है, उसका निरूपण है। इन्द्र का वायु अर्थ करते हुए वायु को सामान्य एवं वैज्ञानिक विशेषताएं जो दयानन्दभाष्य में वर्णित हैं, उनका भी दिग्दर्शन है। इन्द्र देवता से सूचित गृहस्थ धर्म का प्रतिपादन करते हुए स्वयंवर-विवाह, पति-पत्नी की योग्यता, उत्तम सन्तान, पति-पत्नी के व्यवहार आदि पर प्रकाश डाला गया है। इन्द्र के दयानन्द-प्रदर्शित जीवात्मा, वैद्य, धनिक, कृषक आदि अर्थों द्वारा इनके कर्तव्यों का भी प्रतिपादन है।

<u>सप्तम अध्याय</u> — महर्षि ने अपने वेदभाष्य में कतिपय इन्द्रदेवताक मन्त्रों में श्लेषालंकार से इन्द्र के एकाधिक अर्थ करते हुए द्व्यर्थक या बह्वर्थक व्याख्याएं भी प्रस्तुत की हैं। यथा इन्द्र के कहीं परमेश्वर और सूर्य, कहीं परमेश्वर और वायु, कहीं परमेश्वर और विद्युत्, कहीं परमेश्वर, वायु और सूर्य, कहीं परमेश्वर, सूर्य, अग्नि, प्राण और वायु, कहीं परमेश्वर और विद्वान् पुरुष, कहीं परमेश्वर और सभासेनाध्यक्ष राजा, कहीं परमेश्वर और सेनापति, कहीं विद्वान् पुरुष, सेनापति और सूर्य, कहीं राजा और अध्यापक दो-दो, तीन-तीन या अधिक-अधिक अर्थ किये हैं। वेदमन्त्रों की अनेकार्थक व्याख्याएं यास्काचार्य आदि ने भी की थी, परन्तु दयानन्द की जैसे अन्य वैदिक विषयों में उल्लेखनीय देन है वैसे ही वेदों की अनेकार्थता के प्रतिपादन में भी है, क्योंकि उन्होंने श्लेषालंकार का प्रयोग अपने वेदभाष्य में जितना किया है उतना अन्य किसी आचार्य ने अब तक नहीं किया था। दयानन्द की इस अनेकार्थक योजना को इस अध्याय में दर्शाया गया है।

<u>अष्टम अध्याय</u> — प्रमुख वैदिक देवों इन्द्र, अग्नि आदि की वेदों में जैसे स्वतन्त्र स्तुति मिलती है, वैसे ही क्वचित् इनकी किन्हीं सहचारी देवों के साथ भी स्तुति पायी जाती है। इन सहचारी देवों को ही निरुक्तकार ने

संस्तविक देव कहा है । निरुक्त के अनुसार इन्द्र के संस्तविक देव अग्नि, सोम, वरुण, पूषन्, बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, पर्वत, कुत्स, विष्णु और वायु हैं; अत: वेद में इन्द्राग्नी, इन्द्रासोमा, इन्द्राकुत्सा, इन्द्राविष्णू और इन्द्रवायू के रूप में इन्द्र की सहचरित स्तुति उपलब्ध होती है । इन्द्राग्नी का अर्थ दयानन्द भाष्य में वायु-वह्नि, प्राण-विद्युत्, वायु-विद्युत्, अध्यापक-उपदेशक, विद्यार्थी-अध्यापक, सभापति-सेनापति आदि किया गया है । इन्द्रवायू से महर्षि दयानन्द सूर्य-पवन, अग्नि-पवन, विद्युत्-पवन, अध्यापक-उपदेशक, राजा-सेनापति, राजा-राजमन्त्री, योगोपदेष्टा-योगाभ्यासी आदि अर्थ लेते हैं । इन्द्रावरुणौ के सूर्य-चन्द्रमा, अग्नि-जल, वायु-जल, राजा-अमात्य, राजा-सेनापति एवं राजा-प्रजा अर्थ किये गये हैं । इन्द्राबृहस्पती से स्वामी जी राजा-प्रधानमन्त्री और राजा-उपदेशक अर्थ ग्रहण करते हैं । इसी प्रकार अन्य युगलों के भी विभिन्न अर्थ दृष्टिगत होते हैं । इन सबका सोदाहरण अध्ययन इस अध्याय में किया गया है ।

<u>नवम अध्याय</u> — उपसंहार रूप में इन्द्र से सम्बद्ध कतिपय अवशिष्ट विषयों पर इस अध्याय में विचार किया गया है जो इस प्रकार हैं — इन्द्र का जन्म, इन्द्र के शत्रु, इन्द्र का सोमपान, जलों के झाग से नमुचि का वध, दध्यङ् की हड्डियों से वृत्र-संहार, इन्द्र के हरि । अन्त में इन्द्रदेवताक मन्त्रों के भाष्य में दयानन्द की जो विशिष्ट देन हैं, उनका संक्षेप से परिचय दिया गया है ।

इस सम्पूर्ण विवेचन से जो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित वेदभाष्यशैली की उज्ज्वल गरिमा एवं वेदार्थ के सम्बन्ध में एक नवीन दिशा के सूत्रपात की झांकी मिलती है, वह वेद के विद्यार्थी और शोधकर्ता को अवश्य चमत्कृत करेगी तथा महर्षि दयानन्द युग-युग तक वेदार्थ में प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करते रहेंगे, ऐसी हमारी आशा है ।

—